वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 83 बुधवार 2 सितम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

विद्यार्थियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकताः मुख्य सचिव

मुख्य सचिव श्रीनिवास बोले, विद्यालयों में सुरक्षित भवन, स्वच्छ शौचालय और पेयजल की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करें

स्कूल आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण के लिए 12,335.90 करोड़ रुपये की कार्ययोजना प्रस्तावित

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास की अध्यक्षता में मंगलवार को शासन सचिवालय में राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर पीठ द्वारा डी.बी. सिविल रिट पिटीशन संख्या 11613/2025 में 11 अगस्त, 2026 को दिए गए निर्देशों की अनुपालना की उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में प्रदेश के शिक्षण संस्थानों में सुरक्षित आधारभूत संरचना, शौचालय, स्वच्छता एवं पेयजल सुविधाओं से संबंधित बिंदुओं पर विभागवार प्रगति और अनुपालना की समीक्षा की गई। मुख्य सचिव ने कहा कि विद्यार्थियों की सुरक्षा राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। किसी भी जर्जर अथवा असुरक्षित विद्यालय भवन और कक्षा-कक्ष का उपयोग नहीं किया जाए। उन्होंने सभी शिक्षण संस्थानों में सुरक्षित भवन और आवश्यक मूलभूत सुविधाएं सुनिश्चित करने के लिए संबंधित विभागों को समन्वय के साथ समयबद्ध कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने विद्यालय भवनों की सुरक्षा, मरम्मत एवं पुनर्निर्माण से संबंधित कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग करने को भी कहा। मुख्य सचिव ने विद्यालयों, उच्च शिक्षा विभाग के कॉलेज, तकनीकी कॉलेजों की सुरक्षा की सतत निगरानी के लिए संयुक्त निदेशकों को नियमित निरीक्षण कर शाला दर्पण पोर्टल पर स्थिति अद्यतन करने के निर्देश दिए। संभाग स्तर पर प्रशासनिक अधिकारियों को नोडल अधिकारी बनाया गया है, जो विद्यालय सुरक्षा, बाल संरक्षण तथा जर्जर भवनों एवं कक्षा-कक्षों की स्थिति की नियमित समीक्षा कर प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। ग्राम पंचायतों के माध्यम से राजकीय विद्यालयों में नियमित साफ-सफाई एवं स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए भी आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने सभी संबंधित विभागों को न्यायालय के निर्देशों की तथ्यात्मक एवं बिंदुवार अनुपालना सुनिश्चित करने तथा इसकी नियमित मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। उन्होंने विभागों को अद्यतन आंकड़ों के आधार पर समेकित प्रगति रिपोर्ट तैयार रखने तथा शेष कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में पूरा करने को कहा। उन्होंने बताया कि राजकीय विद्यालय भवनों की स्वतंत्र तकनीकी सुरक्षा जांच के लिए आईआईटी जोधपुर और एमएनआईटी जयपुर के सिविल इंजीनियरिंग विशेषज्ञों की समिति गठित की गई है। आईआईटी जोधपुर की रिपोर्ट एवं अनुशंसाएं प्राप्त हो चुकी हैं, जबकि एमएनआईटी जयपुर की रिपोर्ट अपेक्षित है। विद्यालय भवनों के निर्माण, पुनर्निर्माण एवं मरम्मत में राष्ट्रीय भवन संहिता, एनसीपीसीआर स्कूल सुरक्षा दिशा-निर्देश, बीआईएस मानकों तथा अन्य निर्धारित तकनीकी मानकों की पालना सुनिश्चित की जा रही है। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा कुलदीप रांका, प्रमुख शासन सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य गायत्री ए. राठौड़ सहित जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग एवं संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

65 हजार 308 राजकीय विद्यालयों का तकनीकी सर्वेक्षण करवाया

अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा राजेश यादव ने बताया कि प्रदेश के 65 हजार 308 राजकीय विद्यालयों का तकनीकी सर्वेक्षण करवाया गया है। सर्वेक्षण में 3 हजार 768 जर्जर विद्यालय भवन तथा 83 हजार 783 जर्जर कक्षा-कक्ष चिन्हित किए गए। विद्यार्थियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जर्जर भवनों के उपयोग पर रोक लगाई गई है तथा प्रभावित विद्यालयों के संचालन के लिए सुरक्षित वैकल्पिक व्यवस्थाएं की गई हैं। यादव ने बताया कि स्कूल आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण के लिए वर्ष 2026-27 से 2030-31 तक 12 हजार 335.90 करोड़ रुपये की कार्ययोजना प्रस्तावित की गई है। इसके तहत 3 हजार 587 नए विद्यालय भवनों के निर्माण पर 2 हजार 487.75 करोड़ रुपये, 22 हजार 589 विद्यालयों की वृहद मरम्मत पर 1 हजार 129.45 करोड़ रुपये, 83 हजार 783 जर्जर कक्षा-कक्षों के स्थान पर नए कक्षा-कक्षों के निर्माण पर 8 हजार 378.30 करोड़ रुपये तथा 13 हजार 616 जर्जर शौचालयों के पुनर्निर्माण पर 340.40 करोड़ रुपये का प्रावधान प्रस्तावित है। इस वर्ष स्कूल आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण पर 3 हजार करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा।

विद्यालय पेयजल सुविधा से वंचित नहीं रहे

श्रीनिवास ने विद्यालयों में पेयजल की उपलब्धता पर विशेष जोर देते हुए कहा कि कोई भी विद्यालय पेयजल सुविधा से वंचित नहीं रहना चाहिए। उन्होंने प्रत्येक विद्यालय में नल कनेक्शन अथवा समुचित वैकल्पिक पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित करने के साथ पेयजल की गुणवत्ता की नियमित जांच के निर्देश दिए। उन्होंने विद्यालयों में पर्याप्त एवं स्वच्छ शौचालय, उनकी नियमित सफाई एवं रखरखाव और उचित जल निकासी सुनिश्चित करने को कहा। साथ ही चिकित्सा, तकनीकी एवं उच्च शिक्षा संस्थानों सहित निजी एवं मेडिकल कॉलेजों में भी पर्याप्त एवं स्वच्छ शौचालय, पेयजल तथा स्वच्छता सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

श्रमण संस्कृति संस्थान का 31वां स्थापना दिवस समारोह हर्षोल्लास एवं गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न

नवीनीकृत 15 कक्षों का हुआ भव्य लोकार्पण, अनेक भामाशाह परिवारों ने संस्थान की योजनाओं से जुड़कर की पुण्यार्जन की घोषणाएं

सांगानेर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, जयपुर का 30 वर्ष की सम्पूर्ति पर 31वाँ स्थापना दिवस समारोह आज प्रातःकाल संस्थान के विद्या सुधा मंडप में अत्यंत भव्य, गरिमामय एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव संस्थान संप्रेरक 108 श्री सुधासागर जी महाराज को स्मरण करते हुए संस्थान के नवनीकृत कार्यालय का लोकार्पण तथा अनेक भामाशाहों के पुण्यार्जन से निर्मित 15 कक्षों का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाज के प्रमुख भामाशाह श्री अशोक जी पाटनी एवं श्रीमती सुशीला जी पाटनी रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री विवेक जी काला ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति प्रदान की। कार्यक्रम प्रातः 9:00 बजे प्रारंभ होकर दोपहर 12:30 बजे तक चला। समारोह में संस्थान के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि श्री अशोक जी पाटनी ने कहा कि ''संस्थान हमारे हृदय में बसता है, इसलिए हम सदैव संस्थान की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।'' उन्होंने कहा कि श्रमण संस्कृति संस्थान का निर्माण केवल एक भवन का निर्माण नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर का निर्माण है। स्थापना दिवस के इस पावन अवसर पर संस्थान की विकास-यात्रा में योगदान देने वाले उन सभी नींव के स्तंभों का स्मरण एवं सम्मान किया गया, जिनके अथक पुरुषार्थ एवं समर्पण से संस्थान आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। संस्थान के समस्त पूर्व पदाधिकारियों, वर्तमान प्रबंध तंत्र एवं प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई। संस्थान के भव्य निर्माण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली निर्माण समिति के प्रमुख एवं कार्याध्यक्ष आदरणीय श्री प्रमोद जी पहाड़िया तथा संयुक्त मंत्री श्री दर्शन जी वाकलीवाल साहब के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया गया। उनके सफल पुरुषार्थ एवं सतत प्रयासों से संस्थान का वर्तमान भव्य स्वरूप साकार हो सका है। संस्थान के कार्यालयों का नवीनीकरण एवं सौंदर्यीकरण को नई भव्यता प्रदान करने में आदरणीय श्री विनोद जी छाबड़ा (मोनू भैया) के अथक पुरुषार्थ एवं नई सोच का ही सुफल है कि संस्थान के नवीनीकरण कार्य को विशेष आकर्षण एवं भव्यता प्राप्त हो सकी, इस योगदान के लिए संस्थान परिवार ने हृदय से उनका आभार व्यक्त किया। समारोह में यह भी विशेष रूप से उल्लेखित किया गया कि संस्थान के विकास में अनेक महानुभावों ने निस्वार्थ भाव से अपना समय, श्रम, सहयोग एवं संसाधन समर्पित किए हैं। इन्हीं सामूहिक प्रयासों का परिणाम है कि संस्थान आज श्रमण संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान संस्थान के अधिष्ठाता आदरणीय डॉ. जयकुमार जी जैन, अध्यक्ष महोदय श्री शान्ति कुमार जी जैन एवं कोषाध्यक्ष श्री ऋषभ जी जैन के अपरिहार्य कारण से उनकी प्रत्यक्ष उपस्थिति नहीं हो सकी, किंतु उनका आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ पूरे कार्यक्रम में परोक्ष रूप से संस्थान परिवार को प्राप्त होती रहीं। इनके अलावा और भी प्रबंध तंत्र के महानुभव जो उपस्थित नहीं रहे परंतु उन्होंने अपना आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं आज के दिवस संस्थान के लिए परोक्ष रूप से प्रेषित की। संस्थान के निदेशक डॉ. शीतल चंद जी जैन ने अपने निदेशकीय वक्तव्य में संस्थान की विकास-यात्रा में सहयोग देने वाले समस्त महानुभावों का स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। वहीं संस्थान के उपप्राचार्य महोदय ने संस्थान के गौरवपूर्ण 30 वर्षीय इतिहास की विस्तृत गाथा प्रस्तुत करते हुए बताया कि किस प्रकार संस्थान ने तीन दशकों की यात्रा में ज्ञान, संस्कार एवं श्रमण संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। इस अवसर पर संस्थान की विभिन्न योजनाओं से प्रेरित होकर अनेक भामाशाह परिवारों ने संस्थान से जुड़कर दान एवं पुण्यार्जन की घोषणाएँ भी कीं जिनमें विशेष रूप से मोहित जी राणा परिवार की ओर से भोजनशाला के नवीनीकरण के पुण्यार्जन हेतु घोषणा की गई तो दूसरी ओर श्रीमान विवेक जी काला परिवार की ओर से शिक्षक कक्षों के नवीनीकरण की घोषणा की गई। इन सभी घोषणाओं से समारोह में उपस्थित समाजबंधुओं में विशेष उत्साह एवं आनंद का वातावरण दिखाई दिया। कार्यक्रम में अंतिम वक्तव्य के रूप में आभार ज्ञापन हेतु संस्थान के मंत्री महोदय श्री सुरेश जी कासलीवाल ने समागत सभी महानुभावों का आभार ज्ञापन करते हुए सभी श्रेष्ठियों के योगदानों का स्मरण किया। कार्यक्रम का सफल एवं प्रभावशाली संचालन संस्थान के प्राचार्य श्री सतीश कुमार जैन एवं उपप्राचार्य डा. किरणप्रकाश जी जैन द्वारा किया गया। समारोह में संस्थान के विद्वान, व्याख्याता, स्टॉफ, छात्र - छात्रायें, स्नातक परिवार, पदाधिकारी, भामाशाह एवं समाज के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। 30 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा के इस अवसर पर संस्थान परिवार ने संकल्प व्यक्त किया कि आने वाले समय में भी श्रमण संस्कृति, जिनवाणी, ज्ञान एवं संस्कारों की इस अमूल्य धरोहर को और अधिक व्यापक एवं विश्वव्यापी स्वरूप प्रदान करने के लिए निरंतर पुरुषार्थ किया जाएगा।

सतीश कुमार जैन (प्राचार्य)
श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर

ज्ञान, संस्कार और श्रमण संस्कृति के संरक्षण का केंद्र बना सांगानेर का श्रमण संस्कृति संस्थान

तीन दशक की गौरवगाथा, नए संकल्पों के साथ मना श्रमण संस्कृति संस्थान का 31वां स्थापना दिवस

भामाशाहों के सहयोग से संवरा श्रमण संस्कृति संस्थान, 31वां स्थापना दिवस बना यादगार

राजनीति

आईएएस/आईपीएस अधिकारियों का इस्तीफा

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) और भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) को देश की शासन व्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। इन सेवाओं में प्रवेश केवल सरकारी नौकरी हासिल करना नहीं, बल्कि संविधान, राज्य और जनता के प्रति जिम्मेदारी निभाना भी है। इसलिए किसी आईएएस या आईपीएस अधिकारी का इस्तीफा महज व्यक्तिगत निर्णय नहीं होता, बल्कि यह प्रशासनिक व्यवस्था, कार्य संस्कृति और शासन की प्राथमिकताओं से जुड़े सवाल भी खड़े करता है। आईएएस/आईपीएस अधिकारी का इस्तीफा किसी सामान्य कर्मचारी के इस्तीफे जैसा नहीं होता। इन सेवाओं में प्रवेश के लिए कठिन प्रतियोगी परीक्षा, कठोर प्रशिक्षण और वर्षों की जिम्मेदारियों से गुजरना पड़ता है। हालांकि हर इस्तीफे को व्यवस्था की विफलता मानना उचित नहीं होगा। पारिवारिक जिम्मेदारियां, स्वास्थ्य, व्यक्तिगत परिस्थितियां, वैकल्पिक करियर या जीवनशैली में बदलाव जैसे वास्तविक कारण भी हो सकते हैं। लेकिन जब इस्तीफे के पीछे निर्णय लेने की स्वतंत्रता में कमी, राजनीतिक या संस्थागत दबाव और लगातार असंतोष जैसे कारण दिखाई दें, तो मामला व्यक्तिगत न रहकर संस्थागत हो जाता है। प्रशासनिक अधिकारियों का मनोबल सीधे तौर पर शासन की प्रभावशीलता से जुड़ा है। जिला स्तर पर अधिकारी कानून-व्यवस्था, विकास, सामाजिक तनाव, जन शिकायतों और निर्वाचित प्रतिनिधियों की अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाते हैं। यदि उन्हें लगे कि निर्णय कानून, नियम और जनहित के बजाय बाहरी दबावों से प्रभावित हो रहे हैं, तो उनकी कार्यक्षमता और पेशेवर आत्मविश्वास कमजोर हो सकता है। तबादलों की अनिश्चितता, अत्यधिक कार्यभार, परियोजनाओं में देरी और निर्णयों के लिए पर्याप्त संस्थागत समर्थन का अभाव भी मनोबल को प्रभावित करता है। एक सक्षम अधिकारी से कठिन परिस्थितियों में निष्पक्ष और साहसिक निर्णय लेने की अपेक्षा की जाती है। इसके लिए उसे पेशेवर स्वतंत्रता और संस्थागत सुरक्षा दोनों चाहिए। यदि अधिकारी अपने निर्णयों के संभावित राजनीतिक या व्यक्तिगत परिणामों को लेकर लगातार चिंतित रहे, तो वह जनहित के बजाय अपने करियर की सुरक्षा को प्राथमिकता दे सकता है।

संपादकीय

संघ के शताब्दी वर्ष में वैश्विक संवाद की परीक्षा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत इस समय अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन की वैश्विक संपर्क यात्रा पर हैं। यह यात्रा संघ के शताब्दी वर्ष समारोह का हिस्सा है। इसका सबसे चर्चित पड़ाव 29 अगस्त को न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में आयोजित 'यूनिवर्सल वननेस सेलिब्रेशन' (सार्वभौमिक एकता समारोह) रहा, जहां उन्होंने 5,000 से अधिक भारतीय-अमेरिकी समुदाय के लोगों को संबोधित

किया। इस आयोजन का संदेश था ''दुनिया एक परिवार है'', यानी ''वसुधैव कुटुंबकम''। टाइम्स स्क्वायर के बिलबोर्ड पर डॉ. भागवत की तस्वीरों के साथ ''संकल्प, सद्भाव और संवाद'' जैसे स्लोगन भी प्रदर्शित किए गए। यह यात्रा केवल एक भाषण तक सीमित नहीं है, बल्कि संघ के वैश्विक संपर्क और वैचारिक विस्तार के एक नए चरण के रूप में देखी जा सकती है। 2018 में शिकागो में आयोजित विश्व हिंदू कांग्रेस के बाद यह डॉ. भागवत की अमेरिका में सबसे प्रमुख सार्वजनिक उपस्थितियों में से एक है। न्यूयॉर्क में उन्होंने उद्योग, टेलीकॉम, स्पेस, क्लीन एनर्जी और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों से जुड़े लोगों के साथ राउंडटेबल चर्चाओं में भी हिस्सा लिया। इससे संकेत मिलता है कि संघ अब केवल शाखा और संस्कारों तक सीमित रहने के बजाय वैश्विक भारतीय समुदाय को भारत के विकास और उसके व्यापक नैरेटिव से जोड़ने की दिशा में भी प्रयास कर रहा है। हालांकि, इस यात्रा ने एक नई बहस को भी जन्म दिया है। न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी ने इस कार्यक्रम का खुलकर विरोध किया और कहा कि वह संघ की विचारधारा का समर्थन नहीं करते। 61 संगठनों, जिनमें 'हिंदूज फॉर ह्यूमन राइट्स' भी शामिल है, ने मैडिसन स्क्वायर गार्डन के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उनका प्रतिनिधित्व नहीं करता। अमेरिकी संस्था 'यूसर्फ' ने तो अमेरिकी सरकार से डॉ. भागवत का वीजा रद्द करने तक की मांग कर दी। दूसरी ओर, कार्यक्रम के आयोजक 'अहेड' फोरम का एक्स अकाउंट अचानक सस्पेंड हो गया, जिसे संगठन ने बाद में एक गलती बताया। भारत के विदेश मंत्रालय ने इन घटनाक्रमों पर कड़ा जवाब दिया। मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि 'यूसर्फ' का अपना एजेंडा है और वह भारत की बहुलतावादी वास्तविकता को नहीं समझता। इस पूरे घटनाक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू भारतीय डायस्पोरा की बदलती भूमिका भी है। वैश्विक भारतीय अब केवल वोट बैंक नहीं, बल्कि 'विचार बैंक' भी बन रहे हैं। अमेरिका में 45 लाख से अधिक भारतीय मूल के लोग रहते हैं और अमेरिकी राजनीति, कारोबार तथा सामाजिक जीवन में उनका प्रभाव लगातार बढ़ा है। ऐसे में संघ का वैश्विक भारतीय समुदाय के साथ सीधा संवाद डायस्पोरा की राजनीति और भारत से उसके संबंधों में एक नए अध्याय की शुरूआत का संकेत दे सकता है। विरोध भी लोकतंत्र का हिस्सा है। अमेरिका में शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन की स्वतंत्रता है, लेकिन उसी अमेरिका में 5,000 से अधिक लोग 'वसुधैव कुटुंबकम' का संदेश सुनने के लिए एकत्रित हुए। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

22 हजार करोड़ का दावा...

डॉ. प्रियंका सौरभ

राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण द्वारा सुभाष चंद्र बैंक के लगभग 22,006 करोड़ रुपये के दावों के निपटारे को महज 6.5 करोड़ रुपये में अस्थायी मंजूरी देने के आदेश ने बैंकिंग क्षेत्र के साथ-साथ दिवालियापन कानून और आर्थिक न्याय को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह मामला केवल किसी एक कारोबारी या कंपनी का विवाद नहीं, बल्कि बड़े कॉरपोरेट समूहों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, नियामक संस्थाओं और न्यायिक व्यवस्था की जवाबदेही से जुड़ा प्रश्न बन गया है। जब दावे की राशि में इतनी बड़ी कटौती होती है, तो यह जानना जरूरी है कि समाधान प्रक्रिया किन मानदंडों पर आधारित थी और सार्वजनिक धन के हितों की कितनी रक्षा हुई। दिवालियापन और दिवालिया संहिता का उद्देश्य संकटग्रस्त कंपनियों का समयबद्ध समाधान, लेनदारों के हितों की रक्षा और वित्तीय अनुशासन सुनिश्चित करना है। इसका लक्ष्य हर मामले में अधिकतम वसूली करना जरूरी नहीं, बल्कि व्यावहारिक और आर्थिक रूप से टिकाऊ समाधान तलाशना भी है। फिर भी, यदि किसी मामले में दावे की तुलना में बेहद कम राशि स्वीकार की जाती है, तो प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता की जांच आवश्यक हो जाती है। खासकर तब, जब संबंधित बैंक सार्वजनिक क्षेत्र के हों और नुकसान का अंतिम प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से आम नागरिकों और सरकारी वित्त पर पड़ता हो। यह सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत में बैंकिंग व्यवस्था छोटे कर्जदारों के प्रति अपेक्षाकृत कठोर मानी जाती है। किसान, छोटे व्यापारी, निम्न-मध्यम वर्ग के लोग और शिक्षा ऋण लेने वाले युवा मामूली चूक पर नोटिस, वसूली और कानूनी कार्रवाई का सामना करते हैं। वहीं बड़े कारोबारी ऋणों के मामलों में पुनर्गठन, समाधान और 'हेयरकट' जैसे तकनीकी शब्द सामने आते हैं। यदि 22,000 करोड़ रुपये के दावे पर इतनी बड़ी कटौती होती है, जबकि मामूली बकाया के लिए किसी छोटे कर्जदार की संपत्ति खतरे में पड़ सकती है, तो आर्थिक असमानता की भावना मजबूत होना स्वाभाविक है। मामले का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू पारदर्शिता है। दावे की वास्तविक स्थिति, परिसंपत्तियों के मूल्यांकन, स्वीकार की गई राशि और कटौती तय करने की प्रक्रिया जैसे सवालों के जवाब सार्वजनिक और सरल भाषा में उपलब्ध होने चाहिए। जब निर्णय प्रक्रिया आम नागरिक की समझ से बाहर रहती है, तो संदेह और अविश्वास को जगह मिलती है। ऐसे मामलों में यह स्पष्ट होना चाहिए कि क्या समान परिस्थितियों वाले सभी कर्जदारों के साथ समान व्यवहार किया जाता है। दिवालियापन प्रक्रिया के समर्थकों का तर्क हो सकता है कि लंबे मुकदमों और परिसमापन की तुलना में कम राशि पर व्यावहारिक समाधान बैंक के हित में हो सकता है। यह तर्क कुछ परिस्थितियों में उचित भी हो सकता है। लेकिन इसकी स्वीकार्यता तभी होगी, जब निर्णय पारदर्शी, नियमसम्मत और समान मानकों पर आधारित हो। कानूनी रूप से वैध निर्णय और सामाजिक रूप से न्यायसंगत निर्णय हमेशा एक ही चीज नहीं होते। यह प्रकरण सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकिंग व्यवस्था में जवाबदेही की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। ऋण स्वीकृति से लेकर उसकी निगरानी, चूक और समाधान तक हर चरण की समीक्षा जरूरी है। यदि बड़े जोखिम वाले ऋणों से होने वाला नुकसान अंततः सार्वजनिक संसाधनों पर पड़ता है, तो ''निजी लाभ, सार्वजनिक हानि'' की पुरानी समस्या फिर सामने आ सकती है।

श्री दिगंबर जैन पदयात्रा संघ की कार्यकारिणी समिति की बैठक संपन्न

जयपुर से श्री महावीर जी की 40वीं पदयात्रा 14 अक्टूबर को होगी रवाना, महेश जैन को बनाया पदयात्रा का संयोजक

जयपुर. शाबाश इंडिया। पदयात्राओं एवं धार्मिक यात्राओं के माध्यम से भगवान महावीर के सिद्धांतों, अहिंसा एवं शाकाहार का प्रचार-प्रसार करने, जैन धर्म की प्रभावना बढ़ाने तथा जैन संस्कृति की रक्षा के उद्देश्य से वर्ष 1986 में स्थापित श्री दिगंबर जैन पदयात्रा संघ, जयपुर के तत्वावधान में जयपुर से श्री महावीर जी की 40वीं पदयात्रा आगामी 14 अक्टूबर को रवाना होगी। यह निर्णय पदयात्रा संघ की कार्यकारिणी समिति की बैठक में लिया गया। संघ के संरक्षक सुभाष चंद जैन के अनुसार बैठक में जयपुर से श्री महावीर जी की पदयात्रा के लिए प्रतापनगर निवासी महेश जैन को सर्वसम्मति से संयोजक नियुक्त किया गया। बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार सोभाग मल जैन, ज्ञान चंद जैन, राजीव अजमेरा, सुकुमार जैन, नरेंद्र शाह, राजेश शाह, अरुणा दीवान एवं दीपा गोधा को जयपुर महानगर क्षेत्र से सह-संयोजक बनाया गया है। इसी प्रकार क्षेत्रीय सह-संयोजक के रूप में विक्रम जैन (खोराबीसल), जितेंद्र गंगवाल (जोबनेर), पंकज बडजात्या (चौमू), अजय काला (चंदलाई), सुरेश छाबड़ा (सीकर), अजय जैन (अजमेर), चंद्रकांता लुहाड़िया (सिकंदरा) एवं राहुल जैन (रुलाना) को जिम्मेदारी सौंपी गई है। संयोजक महेश जैन ने बताया कि पदयात्रा के लिए जयपुर से श्री महावीर जी तक के मार्ग का सर्वे करने के लिए बुधवार, 9 सितंबर को 11 सदस्यीय टीम रवाना होगी। प्रचार प्रभारी विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार संघ की ओर से जयपुर के विभिन्न दिगंबर जैन मंदिरों सहित आसपास के गांवों एवं कस्बों में 15 सितंबर से लगातार जनसंपर्क अभियान चलाया जाएगा। बैठक की अध्यक्षता पूर्व संयोजक एवं वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य मनीष लुहाड़िया ने की। बैठक में संघ के संरक्षक सुभाष चंद जैन, पूर्व संयोजक सुरेश ठोलिया, सूर्य प्रकाश छाबड़ा, प्रकाश गंगवाल, सलिल जैन, अमर चंद दीवान (खोराबीसल), सुनील चौधरी, राजेंद्र जैन (मोजमाबाद), राज कुमार बडजात्या, विनोद जैन (कोटखावदा), जिनेंद्र जैन, पवन जैन, सुशील जैन, भाग चंद गोधा, सोभाग मल जैन, महेश जैन सहित अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे।

7 दिवसीय पदयात्रा 14 अक्टूबर को होगी रवाना

श्री दिगंबर जैन पदयात्रा संघ, जयपुर के तत्वावधान में संघ के संरक्षक सुभाष चंद जैन एवं पदयात्रा संयोजक महेश जैन के नेतृत्व में जयपुर से श्री महावीर जी की 40वीं पदयात्रा 14 अक्टूबर को रवाना होगी। संघ के संरक्षक सुभाष चंद जैन ने बताया कि पदयात्रा बुधवार, 14 अक्टूबर को आगरा रोड स्थित खानिया की संघी जी की नसिया से दोपहर 3 बजे प्रस्थान करेगी। पदयात्रा के दौरान विभिन्न पड़ावों पर धार्मिक आयोजन किए जाएंगे। इसमें बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल होंगी। प्रचार संयोजक विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि पदयात्रा 15 अक्टूबर को मोहनपुरा, 16 अक्टूबर को दौसा, 17 अक्टूबर को सिकंदरा तथा 18 अक्टूबर को गुढ़ाचंद्रजी एवं नादौती होते हुए सोमवार, 19 अक्टूबर को श्री महावीर जी पहुंचेगी। वहां विशाल जुलूस के साथ पदयात्री भगवान महावीर के सामूहिक दर्शन करेंगे। दोपहर में पदयात्री सम्मान समारोह तथा सायंकाल महाआरती एवं भक्ति संध्या का आयोजन किया जाएगा। संयोजक महेश जैन ने बताया कि मंगलवार, 20 अक्टूबर को प्रातः संगीतमय शांति विधान पूजा का आयोजन होगा। इसके बाद दोपहर में पदयात्री बसों के माध्यम से जयपुर के लिए रवाना होंगे। पदयात्रा के समापन के बाद श्री महावीर जी से जयपुर लौटने के लिए संघ की ओर से बसों की निःशुल्क व्यवस्था की जाएगी। श्री जैन के अनुसार पदयात्रा के दौरान धार्मिक प्रश्न मंच, कवि सम्मेलन, ''मेरा भारत महान'' हाउजी, धार्मिक ज्ञान प्रकाश प्रतियोगिता सहित विभिन्न विशेष आयोजनों का आयोजन किया जाएगा।

विनोद जैन कोटखावदा
कार्यकारिणी सदस्य
श्री दिगंबर जैन पदयात्रा संघ, जयपुर

श्री दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का जयपुर आगमन पर सम्मान

शीला जैन डोड्या श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन समाज की राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित संस्था श्री दिगंबर जैन महासमिति के सत्र 2016-2019 के लिए त्रैवार्षिक चुनाव संपन्न हुए। चुनाव में आर्किटेक्ट आर.सी. जैन, गाजियाबाद को सर्वसम्मति से राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। उन्होंने अपनी कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए नागपुर निवासी सुनील पंढारी को राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष तथा जयपुर निवासी श्रीमती शीला जैन डोड्या को राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष नियुक्त किया। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष सुनील पंढारी ने पदभार संभालने के बाद जयपुर का दौरा किया। इस अवसर पर सांगानेर स्थित संत सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय में सम्मान समारोह एवं महासमिति की महिला संभागीय पदाधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। मंगलाचरण के बाद जयपुर के विभिन्न महिला संभागों की ओर से श्री सुनील पंढारी एवं श्रीमती शीला जैन डोड्या का तिलक, माला, दुपट्टा एवं साफा पहनाकर भावभीना स्वागत एवं सम्मान किया गया। समारोह में राजस्थान जैन सभा, जयपुर के उपाध्यक्ष एवं राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। श्री सुनील पंढारी ने जयपुर के 18 महिला संभागों के पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए महासमिति की आगामी गतिविधियों एवं योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष शीला जैन डोड्या ने अपने उद्बोधन में सभी संभागीय पदाधिकारियों में ऊर्जा का संचार करते हुए महिला महासमिति की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने तथा सदस्यता अभियान चलाने का आह्वान किया। इस अवसर पर मुनि पुंगव सुधासागर महाराज ससंघ के सानिध्य में इंदौर में आगामी माह आयोजित होने वाले महिला महासमिति के राष्ट्रीय अधिवेशन की जानकारी भी दी गई। विशिष्ट अतिथि विनोद जैन कोटखावदा ने श्री दिगंबर जैन महासमिति के नवनियुक्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों को बधाई दी तथा श्री सुनील पंढारी का जयपुर जैन समाज की ओर से स्वागत किया। संत सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय की निदेशक एवं श्री दिगंबर जैन महासमिति, राजस्थान अंचल की प्रमुख परामर्शक डॉ. वंदना जैन ने मंच संचालन करते हुए महिला महासमिति राजस्थान अंचल की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

किताबों से बाहर निकलेगी पढ़ाई, अब ग्राउंड लेवल पर समाज सेवा सीखेंगे विद्यार्थी

सामाजिक इंटर्नशिप से मिलेगा व्यावहारिक अनुभव

जयपुर. शाबाश इंडिया। किताबी ज्ञान और थ्योरी से आगे बढ़कर युवाओं को सामाजिक सेवा एवं व्यावहारिक अनुभव से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई है। इसके तहत विभिन्न महाविद्यालयों एवं मानव सेवा ट्रस्ट राजस्थान के बीच सामाजिक इंटर्नशिप के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) संपन्न हुआ है। इस पहल से जुड़ने वाले संस्थानों में जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर, रीजनल कॉलेज फॉर एजुकेशन, रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी, पूर्णिमा इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. कॉलेज, राजकीय महाविद्यालय चाकसू, राजकीय महाविद्यालय कोटखावदा तथा आईआईएलएम अकादमी ऑफ हायर लर्निंग शामिल हैं। इस पहल का सीधा लाभ कॉलेज के सैकड़ों छात्र-छात्राओं को मिलेगा। विद्यार्थी अब कक्षा तक सीमित रहने के बजाय समाज की बुनियादी समस्याओं को समझने के साथ-साथ जमीनी स्तर पर काम करने का व्यावहारिक एवं वास्तविक अनुभव हासिल कर सकेंगे। स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ आचार्य एवं चिकित्सक, ट्रस्ट सदस्य तथा मीडिया प्रभारी प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना ने बताया कि विद्यार्थियों को ट्रस्ट द्वारा संचालित विभिन्न सामाजिक परियोजनाओं एवं सामुदायिक गतिविधियों में इंटर्नशिप का अवसर दिया जाएगा। विद्यार्थी शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, बाल अधिकार, दिव्यांगजन सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, सड़क सुरक्षा, कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता एवं ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में प्रत्यक्ष रूप से कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि आमतौर पर कॉलेज विद्यार्थी कंपनियों या कार्यालयों में ही इंटर्नशिप करते हैं, लेकिन सामाजिक इंटर्नशिप के माध्यम से उनमें समाज के प्रति संवेदनशीलता, आलोचनात्मक चिंतन, टीमवर्क एवं नेतृत्व क्षमता जैसे गुण विकसित होंगे। वर्तमान समय में इन कौशलों का करियर में विशेष महत्व है। ट्रस्ट के प्रबंध निदेशक कौशल सत्यार्थी ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबों तक सीमित नहीं होना चाहिए। जब तक विद्यार्थी समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति की परिस्थितियों और सामाजिक सरोकारों से नहीं जुड़ेंगे, तब तक उनकी शिक्षा अधूरी रहेगी। उन्होंने कहा कि यह सहयोग विद्यार्थियों को बेहतर नेतृत्वकर्ता के साथ-साथ संवेदनशील इंसान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। महासचिव दुर्गा वर्मा ने कहा कि युवाओं को समाज के प्रति संवेदनशील बनाने और उन्हें जमीनी स्तर पर कार्य करने का अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में यह पहल महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर जेएनयू के कुलपति प्रो. आर.एल. रैना, सीडलिंग स्कूल ऑफ लॉ के निदेशक प्रो. सतीश सी. शास्त्री, स्वास्थ्य कल्याण कॉलेज की प्राचार्या डॉ. योगेश्वरी गुप्ता, रीजनल कॉलेज के निदेशक डॉ. अशोक सिंह शेखावत, पूर्णिमा कॉलेज के निदेशक डॉ. दिनेश गोयल, डॉ. नुपुर जैन, प्रो. डॉ. रेनू जोशी, डॉ. सरिता जैन, डॉ. शिप्रा वर्मा, डॉ. अनीता गंगराडे, डॉ. प्रिंसी वर्मा सहित अन्य गणमान्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

समाजसेवी प्रदीप जैन ने वार्ड 76 से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में दाखिल किया नामांकन

जयपुर. शाबाश इंडिया

आगामी 11 सितंबर को होने वाले जयपुर नगर निगम के चुनाव में मालवीय नगर विधानसभा क्षेत्र के वार्ड संख्या 76 से कांग्रेस प्रत्याशी एवं प्रसिद्ध समाजसेवी तथा राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन ''लाला'' ने ढोल-नगाड़ों के बीच नगर निगम जगतपुरा जोन उपायुक्त कार्यालय में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इस अवसर पर वार्ड के निवासियों, शुभचिंतकों एवं समर्थकों के साथ जैन समाज सहित विभिन्न समाजों के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। नामांकन दाखिल करने के बाद प्रदीप जैन ने उन्हें प्रत्याशी बनाए जाने पर कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने वार्ड संख्या 76 के समग्र विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा कि क्षेत्र की मूलभूत सुविधाओं में सुधार, स्वच्छता, सड़क, पेयजल एवं अन्य जनसमस्याओं के समाधान के लिए प्राथमिकता से कार्य किया जाएगा।

अम्बाह में नन्हे-मुन्ने बच्चों की भक्ति ने मोहा मन

बैंड-बाजों के साथ निकली संगीतमय महाआरती शोभायात्रा

मुरैना/अम्बाह (मनोज जैन नायक)

नगर में सोमवार की शाम भक्ति, श्रद्धा और संस्कारों का अनूठा संगम देखने को मिला। आचार्य श्री सिद्धांत सागर महाराज की शिष्या एवं अम्बाह जैन बगीची में विराजमान गुरु मां गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री संगममति माताजी ससंघ के मंगल सान्निध्य में चल रही 35 दिवसीय णमोकार महामंत्र अर्चना के अंतर्गत विनम्र एकेडमी एवं वीतराग शासन बालिका मंडल, अम्बाह के पुण्यार्जकत्व में संगीतमय महाआरती का भव्य आयोजन किया गया। महाआरती की विशेषता यह रही कि बैंड-बाजों की मधुर धुन के बीच नन्हे-मुन्ने बच्चे सजी हुई बग्गी में सवार होकर हाथों में ध्वज एवं आरती की थालियां लेकर नगर पालिका चौराहे से जैन बगीची की ओर रवाना हुए। बच्चों की मासूम मुस्कान, लहराते धार्मिक ध्वज और जयघोषों ने राहगीरों का भी ध्यान आकर्षित किया। बच्चों की इस अनूठी सहभागिता ने पूरे आयोजन को विशेष बना दिया। नगर पालिका चौराहे से प्रारंभ हुई महाआरती शोभायात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। महिला, पुरुष, बुजुर्ग एवं बच्चे हाथों में सजी हुई आरती की थालियां लेकर भक्ति में लीन नजर आए। यात्रा के दौरान भक्ति गीतों, णमोकार महामंत्र के जाप एवं धार्मिक जयघोषों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। जैन बगीची की ओर बढ़ती शोभायात्रा के साथ श्रद्धालुओं का उत्साह भी लगातार बढ़ता गया। जैन बगीची प्रांगण पहुंचने के बाद विधिवत श्रीजी की संगीतमय महाआरती की गई। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने करीब एक घंटे तक सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र का जाप किया। एक स्वर में गूंजते महामंत्र से जैन बगीची परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा एवं भक्तिभाव से सराबोर हो उठा। इस अवसर पर गुरु मां संगममति माताजी ने महाआरती के पुण्यार्जक परिवार एवं आयोजन में सहभागी श्रद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान किया। माताजी के मंगल सान्निध्य में बच्चों सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने धर्मलाभ लिया। आयोजन में नन्हे बच्चों की सहभागिता विशेष आकर्षण का केंद्र रही। बच्चों के उत्साह एवं श्रद्धाभाव ने यह संदेश दिया कि धार्मिक संस्कार केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि धार्मिक आयोजनों एवं व्यवहार के माध्यम से उन्हें नई पीढ़ी तक सहजता से पहुंचाया जा सकता है। विनम्र एकेडमी एवं वीतराग शासन बालिका मंडल द्वारा आयोजित इस महाआरती ने अम्बाह में भक्ति, बाल संस्कार एवं सामूहिक धर्मसाधना की सुंदर मिसाल प्रस्तुत की।

जिन शासन एकता संघ का राष्ट्रीय अधिवेशन 6 सितंबर को इंदौर में

गत वर्ष हमारे यहां राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ था, इस वर्ष हमारी विशेष जिम्मेदारी है: राकेश कांसल

अशोक नगर अंचल से बड़ी संख्या में श्रद्धालु राष्ट्रीय अधिवेशन में होंगे शामिल : विजय धुर्रा

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

''संसार में अनेक पगडंडियां हैं, लेकिन मंजिल एक है। व्यक्ति जीवनभर अलग-अलग रास्तों पर चलता है। कई बार आगे बढ़ता है और रास्ता समाप्त होने पर वापस लौट आता है। यही जीव की संसार यात्रा है। पगडंडी कोई भी बना सकता है, लेकिन सही रास्ता गुरु और भगवान बताते हैं।'' यह उद्गार राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने दलालबाग में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि रास्ते पर चलते हुए व्यक्ति गिर सकता है, रुक सकता है, लेकिन यदि दिशा सही है तो वह भटकता नहीं है। मोक्षमार्ग में भी सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र की दिशा स्पष्ट है। गुरुदेव ने एनसीसी के नाइट मार्च का उदाहरण देते हुए कहा कि घने अंधकार और जंगल में रास्ता दिखाई नहीं देता। ऐसे में दिशा-सूचक यह बताता है कि कैंप किस दिशा में है। उसी प्रकार हमारा कैंप मोक्ष है और संसार घना जंगल है। गुरु हमें दिशा बताते हैं, लेकिन मार्ग पर चलना स्वयं जीव को ही पड़ता है। धर्मसभा में मुनि श्री ने कहा कि पंचम काल में भगवान हमारे सामने साक्षात मौजूद नहीं हैं, लेकिन सच्चे गुरु हमारे बीच हैं। गुरु दिशा बताते हैं, मार्ग समझाते हैं और सच्चे देव की पहचान कराते हैं। हालांकि, उस मार्ग पर चलना स्वयं जीव को ही पड़ेगा। उन्होंने कहा कि केवल पूजा-पाठ करना, मंदिर जाना या धार्मिक क्रियाएं करना पर्याप्त नहीं है। यदि दिशा गलत है तो व्यक्ति बहुत कुछ करने के बाद भी मंजिल से दूर रह सकता है। जब व्यक्ति अपने दोषों को देखना बंद कर देता है और हर गलती दूसरे में देखने लगता है, तब उसके सुधार का मार्ग बंद होने लगता है। मुनि श्री ने कहा कि ''मैं जैसा हूं, दुनिया को भी वैसा ही बना दूं'' की भावना व्यक्ति और समाज दोनों के लिए नुकसानदायक है। स्वयं किसी बुराई में फंस जाना एक बात है, लेकिन अपने कारण किसी दूसरे को उसी बुराई में शामिल कर देना उससे भी बड़ा संकट है।

स्वयं कमजोरी नहीं छोड़ पा रहे तो दूसरों को उसमें न डालें

मुनि श्री ने कहा कि यदि हम स्वयं किसी कमजोरी को अभी नहीं छोड़ पा रहे हैं तो कम से कम इतना संकल्प अवश्य लें कि हम किसी दूसरे को भ्रष्ट नहीं करेंगे और किसी दूसरे को पाप में शामिल नहीं करेंगे। यही भावना अहिंसा एवं आत्मकल्याण की दिशा में बड़ा कदम है। कोरोना काल का उदाहरण देते हुए गुरुदेव ने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को संक्रमण का पता चलने के बाद उसने स्वयं को दूसरों से अलग कर लिया, ताकि उसके कारण किसी अन्य व्यक्ति को संक्रमण न हो, तो उसकी भावना दूसरों को बचाने की थी। उन्होंने समझाया कि अपने संकट से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हमारे कारण कोई दूसरा संकट में न पड़े। उन्होंने कहा, ''मैं स्वयं गिरा हूं तो भी किसी दूसरे को न गिराऊं। मैं स्वयं किसी कमजोरी में हूं तो भी किसी दूसरे को उसमें न डालूं। मैं स्वयं कोई दोष नहीं छोड़ पा रहा हूं तो भी अपनी अगली पीढ़ी को वह दोष विरासत में न दूं।''

परिवार को धर्म की विरासत दें

गुरुदेव ने रात्रि भोजन के उदाहरण से समझाते हुए कहा कि यदि कोई व्यक्ति स्वयं रात्रि भोजन का त्याग नहीं कर पा रहा है तो कम से कम अपने बच्चों और परिवार को इसकी प्रेरणा न दे। पिता अपने बेटे से कह सकता है कि ''मैं अभी यह नहीं छोड़ पा रहा हूं, लेकिन तू इसे मत अपनाना।'' अर्थात अपनी कमजोरी को परिवार की परंपरा नहीं बनाना चाहिए।

मिलकर बनाएंगे एक बेहतर, स्वच्छ, सुरक्षित और समृद्ध वार्ड 31
सेवा, समर्पण, विकास
हमारा संकल्प
जन-जन का साथ, वार्ड 31 का विकास
वार्ड नं. 31 से पार्षद प्रत्याशी
जय कुमार जैन
को अपना अमूल्य वोट एवं समर्थन दें
हमारी प्राथमिकताएं
स्वच्छ और सुंदर वार्ड
नियमित सफाई, कचरा प्रबंधन और ग्रीन वार्ड की दिशा में ठोस कदम।
बेहतर सड़कें और गलियां
सड़क एवं नाली निर्माण, मरम्मत और जलभराव की समस्या का स्थायी समाधान।
शुद्ध पेयजल की व्यवस्था
हर घर तक साफ और नियमित पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे।
स्ट्रीट लाइट और सुरक्षा
पूरे वार्ड में स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था और महिलाओं व बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता।
पार्क, खेल मैदान और ओपन जिम
बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों के लिए खेल और व्यायाम की बेहतर सुविधाएं।
शिक्षा और करियर मार्गदर्शन
छात्रों के लिए लाइब्रेरी, डिजिटल शिक्षा और करियर गाइडेंस कार्यक्रम।
वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान
वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वास्थ्य शिविर, पेंशन सहायता और
जन सुनवाई और पारदर्शिता
आपकी समस्याओं का समाधान हमारी प्राथमिकता, हर माह नियमित जन सुनवाई और पारदर्शी कार्यप्रणाली।
हम आगे क्या करेंगे ?
हर गली, हर मोहल्ले का समग्र विकास। युवाओं के लिए रोजगार और स्वरोजगार के अवसर बढ़ाएंगे।
महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष कार्यक्रम और सहायता।
स्वास्थ्य सुविधाओं को और बेहतर बनाने के लिए प्रयास।
सभी त्योहार, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देंगे।
आपका विश्वास, हमारा संकल्प
मिलकर बनाएं वार्ड 31 को आदर्श वार्ड।
कांग्रेस है तो संभव है
आइए! मिलकर शपथ लें वार्ड 31 को प्रगति, समृद्धि और खुशहाली की नई पहचान दें।
चुनाव चिन्ह
हाथ के निशान पर मोहर लगाएं
भारी मतों से विजयी बनाएं
निवेदनकर्ता:
अंशुल सरावगी
होटल रॉयल ललित,
राठौड़ नगर, आम्रपाली मार्ग,
वैशाली नगर, जयपुर-302021
आपका साथी, आपका सेवक
जय कुमार जैन
वार्ड नं. 31

भगवान को याद करेंगे तो आंसू मिट जाएंगे, संसार को याद करेंगे तो जन्मों-जन्म रोते रहेंगे : आचार्य पुलकसागर महाराज

आचार्य पुलकसागर ने सूर्यमहल में दिया दैनिक चातुर्मासिक प्रवचन

आत्मा को वही जान पाएगा, जो पुनर्जन्म में विश्वास रखता है...

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

जैसी हमारी सोच होगी, वैसा ही हमारा जीवन बन जाएगा। सोच बदल लेंगे तो संसार बदल जाएगा। संत और श्रावक में सोच का ही अंतर होता है। व्यक्ति की सोच ही उसके दुख का कारण होती है। भगवान के गुणों का स्मरण करेंगे तो आंसू मिट जाएंगे और संसार के गुणों का स्मरण करेंगे तो जन्मों-जन्म तक रोते रहेंगे। जब सारी दुनिया को भूलते हैं तो भगवान करीब लगते हैं और जब दुनिया समीप लगती है तो भगवान को भूल जाते हैं। यह विचार श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मैन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागर जी महाराज ने मंगलवार को शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में आयोजित चातुर्मासिक प्रवचन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि राग-द्वेष करना व्यक्ति की भूल है और मोह-माया के कारण व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता। आत्मा को वही जान पाएगा, जो पुनर्जन्म में विश्वास रखता है। आत्मा कभी मरती नहीं है। शुद्ध होने पर वह सिद्धगति को प्राप्त करती है और अशुद्ध अवस्था में चार गतियों में भ्रमण करती रहती है। आचार्यश्री ने कहा कि जीवन तप और त्याग से ही संवरता है। उपवास इस अनुभूति के लिए कराया जाता है कि भोजन और पानी के बिना भी शरीर के स्तर से परे आत्मिक अस्तित्व बना रहता है। जब तक तप नहीं करेंगे, तब तक इसकी अनुभूति नहीं हो पाएगी। आचार्य पुलकसागर महाराज ने कहा कि हमें दूसरों को नहीं, बल्कि स्वयं को जानने की जरूरत है। आंखें सबको देखती हैं, लेकिन स्वयं को नहीं देख पातीं। इसी प्रकार आत्मा भी अपने स्वभाव को जाने बिना और जिनेंद्र भगवान के स्वरूप को समझे बिना आत्मबोध की ओर नहीं बढ़ सकती। उन्होंने कहा कि यदि जिनेंद्र भगवान को जीवन से हटा देंगे तो मोक्ष, निर्जरा, कर्मबंध, संसार, श्रावक और चार गति आदि के वास्तविक स्वरूप को कौन बताएगा? भगवान बनने के लिए आत्मा को तपाना पड़ता है। संत बनना कठिन नहीं है, लेकिन इसके लिए अपनी मानसिकता बदलना कठिन है। मानसिकता बदल गई तो चिंतन बदल जाएगा और चिंतन बदल गया तो हमें सृष्टि भी बदली हुई नजर आएगी। श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य सुशील कुमार, प्रदीप, जंबू एवं अजीत गदिया परिवार ने प्राप्त किया। चातुर्मास समिति के संयोजक मनीष शाह एवं सह-संयोजक लोकेश अजमेरा ने बताया कि प्रतिदिन चातुर्मासिक प्रवचन सुबह 8:30 से 10 बजे तक सूर्यमहल में आयोजित किए जा रहे हैं। वहीं, शाम 7 से 8 बजे तक आनंद यात्रा एवं आरती का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें शहर के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु शामिल होकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं।

लायंस क्लब अजमेर आस्था व संस्कार पब्लिक स्कूल ने विद्यार्थियों को सिखाया कृतज्ञता का महत्व

ग्रेटिट्यूड वॉल, निबंध प्रतियोगिता एवं योगाभ्यास का आयोजन

अजमेर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब अजमेर आस्था की ओर से रोहित मेहता लायंस क्वेस्ट वीक के अंतर्गत संस्कार पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रेरणादायी एवं स्वास्थ्यवर्धक गतिविधियों का आयोजन किया गया। क्लब सचिव लायन अनिल चोरड़िया ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान 'ग्रेटिट्यूड वॉल' गतिविधि आयोजित की गई। इसमें विद्यार्थियों ने रंग-बिरंगे स्टिकर्स एवं पर्चियों पर अपने मन के भाव लिखकर वॉल पर चिपकाए। विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता, शिक्षकों, मित्रों एवं प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सुंदर संदेश लिखे।

जैन संत तरुण सागर जी महाराज को दी विनम्र श्रद्धांजलि

अजमेर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन महासमिति, अजमेर संभाग एवं श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग, अजमेर की ओर से क्रांतिकारी राष्ट्रसंत पूज्य मुनि श्री तरुण सागर जी महाराज के समाधि दिवस पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर महासमिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी तथा महासमिति की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य एवं अजमेर संभाग के महामंत्री कमल गंगवाल ने मुनि श्री तरुण सागर जी महाराज के निर्भीक, ओजस्वी एवं सत्य से परिपूर्ण प्रवचनों को स्मरण करते हुए कहा कि महाराज श्री ने अपने प्रवचनों के माध्यम से समाज में चेतना, संस्कार एवं सकारात्मक परिवर्तन का संचार किया। उन्होंने समाजजनों से महाराज श्री द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। महासमिति के प्रवक्ता संजय कुमार जैन ने बताया कि कार्यक्रम में

अध्यक्ष अतुल पाटनी सहित उपस्थित सभी सदस्यों ने मुनि श्री तरुण सागर जी महाराज के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर श्रद्धापूर्वक नमन किया। मुनि श्री तरुण सागर जी महाराज का 1 सितंबर 2018 को शनिवार की सुबह करीब 3:18 बजे दिल्ली के कृष्णा नगर स्थित राधेपुरी में उनके चातुर्मास स्थल पर देवलोक गमन हुआ था। वे 51 वर्ष के थे। बताया गया कि वे पीलिया एवं तेज बुखार के कारण काफी दिनों से अस्वस्थ थे। अंतिम समय में उन्होंने स्वयं औषधि लेना भी छोड़ दिया था। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं ने उनके व्यक्तित्व, कृतित्व एवं समाज को दिए गए संदेशों को स्मरण करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

महावीर पब्लिक स्कूल में 13वीं अंतर्विद्यालयी कथक नृत्य प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

महावीर पब्लिक स्कूल में प्रसिद्ध कथक गुरु स्वर्गीय बाबूलाल जी पाटनी की स्मृति में 13वीं ''अंतर्विद्यालयी कथक नृत्य प्रतियोगिता'' का भव्य आयोजन मंगलवार को किया गया। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता महावीर पब्लिक स्कूल द्वारा आयोजित तथा श्रीमती ललिता देवी रामचंद्र कासलीवाल एजुकेशनल एंडॉवमेंट द्वारा प्रायोजित थी। कार्यक्रम का शुभारंभ मंत्रोच्चारण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। शिक्षा परिषद के मानद मंत्री श्री सुनील बख्शी, कोषाध्यक्ष श्री महेश काला, संयोजक श्री सुदीप ठोलिया तथा संस्था सदस्य श्री विनोद कोटखावदा एवं श्री रुपिन काला ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रवि जैन (आईएएस, सचिव, स्थानीय स्वशासन विभाग एवं आयुक्त, स्थानीय निकाय निदेशालय, राजस्थान सरकार, जयपुर) का माल्यार्पण, साफा पहनाकर एवं शॉल ओढ़ाकर भावभीना स्वागत किया। प्राचार्या श्रीमती सीमा जैन, श्रीमती रितु कासलीवाल, श्रीमती मीनाक्षी नायर एवं श्रीमती सुरभि गोधा ने विशेष प्रस्तुतिकर्ता श्रीमती मनस्विनी शर्मा का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। श्रीमती मनस्विनी शर्मा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जयपुर घराने की प्रसिद्ध नृत्यांगना हैं तथा प्रसिद्ध कथक गुरु श्री गिरधारी महाराज एवं वर्तमान गुरु श्रीमती प्रेरणा श्रीमाली की शिष्या हैं। इसी क्रम में निर्णायक मंडल की सदस्य डॉ. गीता रघुवीर, श्रीमती वर्तिका तिवारी, डॉ. रेखा ठाकर एवं श्रीमती अदिति सोगानी का भी पुष्पगुच्छ भेंट कर अभिनंदन किया गया। प्रतियोगिता में शहर के 10 प्रमुख विद्यालयों के प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मानद मंत्री श्री सुनील बख्शी ने मुख्य अतिथि, विशेष प्रस्तुतिकर्ता, निर्णायक मंडल एवं कथक गुरु स्वर्गीय बाबूलाल जी पाटनी का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों एवं गणमान्यजनों का स्वागत किया। श्रीमती सुरभि गोधा ने श्रीमती ललिता देवी कासलीवाल के प्रभावपूर्ण एवं प्रेरणादायी जीवन-परिचय से उपस्थितजनों को अवगत कराया। इसके पश्चात राष्ट्रस्तरीय ख्याति प्राप्त कथक कलाकार डॉ. गीता रघुवीर ने मनमोहक गणेश वंदना प्रस्तुत की। विभिन्न विद्यालयों की छात्राओं ने सरस्वती वंदना, कृष्ण वंदना, गणेश वंदना, शिव तांडव, श्यामा वंदना एवं नटवर नृत्य सहित विविध कथक प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय नृत्य की समृद्ध परंपरा एवं सांस्कृतिक विरासत को जीवंत कर दिया। उनकी भावपूर्ण एवं मनोहारी प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। विशेष प्रस्तुतिकर्ता श्रीमती मनस्विनी शर्मा की उत्कृष्ट कथक प्रस्तुति कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रही। उनकी भावाभिव्यक्ति, पद संचालन, लय-ताल एवं नृत्य की शास्त्रीय गरिमा ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और पूरे सभागार में तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी।

विजेताओं को पुरस्कार देकर किया सम्मानित

प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित किया गया। एनजीओ मुस्कान की ओर से 15,000 रुपए का ''दूर्वा भसीन मेमोरियल पुरस्कार एवं ट्रॉफी'' तथा श्रीमती मीनाक्षी नायर की ओर से 15,000 रुपए का 'गुरु अवार्ड' प्रथम विजेता जय श्री पेरीवाल हाई स्कूल को प्रदान किया गया। श्री सुधांशु कासलीवाल, ट्रस्टी, श्रीमती ललिता देवी रामचंद्र कासलीवाल एजुकेशनल एंडॉवमेंट की ओर से 7,500 रुपए का द्वितीय पुरस्कार एवं ट्रॉफी महेश्वरी गर्ल्स स्कूल को, 5,000 रुपए का तृतीय पुरस्कार एवं ट्रॉफी महावीर पब्लिक स्कूल को तथा 3,100 रुपए का सांत्वना पुरस्कार एवं ट्रॉफी भारतीय विद्या भवन को प्रदान किया गया। डॉ. गीता रघुवीर की ओर से 5,100 रुपए का ''बेस्ट भावाभिव्यक्ति पुरस्कार एवं ट्रॉफी'' जयपुरिया हाई स्कूल को प्रदान किया गया। वहीं, श्रीमती सुरभि गोधा की ओर से 5,100 रुपए का 'बेस्ट कॉस्ट्यूम अवार्ड एवं ट्रॉफी' महावीर

पब्लिक स्कूल को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त श्री सुधांशु कासलीवाल की ओर से सभी प्रतिभागियों को 2,100 रुपए के प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि श्री रवि जैन ने भगवान महावीर स्वामी एवं स्वर्गीय बाबूलाल जी पाटनी को नमन करते हुए भारतीय संस्कृति के प्राणस्वरूप कथक नृत्य की समृद्ध परंपरा की सराहना की। उन्होंने युवा पीढ़ी से इस गौरवशाली कला-परंपरा को आगे बढ़ाने का आह्वान किया तथा सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय संयोजक श्री सुदीप ठोलिया ने सभी अतिथियों, निर्णायक मंडल, प्रतिभागियों, अभिभावकों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर शहर के अनेक प्रसिद्ध कलाकार, कला-प्रेमी एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में संस्था सदस्यों एवं प्राचार्या ने मुख्य अतिथि श्री रवि जैन एवं विशेष प्रस्तुतिकर्ता श्रीमती मनस्विनी शर्मा को स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का गरिमापूर्ण समापन हुआ।

सज्जन व्यक्ति ही अनुशासनप्रिय हो सकता है : पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव

आत्मानुशासक ही श्रेष्ठ शासक, अनुशासन सिद्धि का साधन : गुरु वाणी प्रवचन

ऋषभोदय. शाबाश इंडिया

पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव के शिष्य श्रुत संवेगी श्रमण सुव्रतसागर महाराज जी ने बताया कि दिल्ली के ऋषभोदय में विराजमान दिगंबर जैन पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए अनुशासन, आत्मसंयम एवं श्रेष्ठ शासन के महत्व पर प्रकाश डाला।

आत्मानुशासक ही श्रेष्ठ शासक

गुरुदेव ने कहा कि अनुशासनप्रिय एवं आत्मानुशासक व्यक्ति ही देश-राष्ट्र का सच्चा सम्राट या शासक हो सकता है। राजा अथवा

सम्राट को केवल अपने हित के बारे में नहीं सोचना चाहिए। उसे अपने देह-सुख और इंद्रिय-सुख की चाह तक सीमित न रहकर देशहित एवं नागरिकों के हित में कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जो शासक स्वयं के साथ-साथ प्रजा का भी ध्यान रखता है, उनके सुख-दुःख में सहभागी बनता है तथा नागरिकों की रक्षा करता है, वही श्रेष्ठ स्वामी होता है। जो स्वयं पर अनुशासन स्थापित कर लेता है, वही दुनिया पर शासन करने की क्षमता रखता है।

अनुशासनप्रियता ही सज्जनता की पहचान

पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी ने कहा कि सज्जन व्यक्ति ही अनुशासनप्रिय हो सकता है। जो अनुशासनप्रिय होता है, वही जीवन में सफलता, प्रशंसा, सुख एवं शांति प्राप्त करता है। अनुशासन सिद्धि का साधन है। व्यक्ति के कुल की पहचान भी उसके अनुशासन से होती है। अनुशासनप्रिय व्यक्ति ही वास्तव में कुलीन होता है। सज्जन एवं कुलीन पुरुष विपत्ति आने पर भी अपने अनुशासन को नहीं छोड़ते।

प्रतिकूल मित्र, अनुकूल शत्रु

गुरुदेव ने कहा कि मित्र भी प्रतिकूल हो सकता है और शत्रु भी अनुकूल हो सकता है। जो मित्र व्यक्ति को कुमार्ग पर ले जाए, वह प्रतिकूल मित्र है, जबकि जो शत्रु व्यक्ति को कुकर्मों से बचा ले, वह अनुकूल शत्रु है। इसलिए व्यक्ति को संबंधों की बाहरी पहचान के बजाय उनके प्रभाव और दिशा को समझना चाहिए।

श्री अभिषेक अशोक पाटील:
कार्याध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर

विश्व पत्र दिवस: भावनाओं को शब्दों में संजोने का दिन

खूंटी. शाबाश इंडिया। विश्व विद्या मार्ग नवयुग पत्रकार महासंघ के तत्वावधान में भगत सिंह चौक पर मंगलवार को विश्व पत्र दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते हुए विश्व विद्या मार्ग नवयुग पत्रकार महासंघ के अध्यक्ष डॉ. दीपक कुमार घोष ने कहा कि डिजिटल युग में हस्तलिखित पत्रों की परंपरा को जीवित रखने के लिए लोगों को कुछ समय स्क्रीन से दूरी बनाकर पत्र लेखन के लिए निकालना चाहिए। हस्तलिखित पत्र रिश्तों को मजबूत करने का माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि इस प्राचीन एवं सुंदर कला को जीवित रखने के उद्देश्य से ऑस्ट्रेलिया के रिचर्ड सिम्पकिन ने 1 सितंबर 2014 को इसकी शुरूआत की थी। मुरहू के समाजसेवी डॉ. धर्मेंद्र नाथ तिवारी ने कहा कि विश्व पत्र दिवस पत्र लिखने की पुरानी एवं भावनात्मक परंपरा को याद करने तथा लोगों को अपने विचार और भावनाएं शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है। लेखक, फिल्म निर्माता, साहित्यकार तथा झारखंड श्री अवार्ड, कला श्री पुरस्कार सहित कई राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त अखिल भारतीय सांस्कृतिक विकास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष तपन कुमार घोष ने कहा कि डिजिटल युग में ई-मेल, मोबाइल संदेश एवं सोशल मीडिया ने संचार को बेहद तेज बना दिया है, लेकिन हाथ से लिखे पत्रों का भावनात्मक महत्व आज भी कायम है। उन्होंने कहा कि पत्र केवल संदेश पहुंचाने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि स्मृतियों, रिश्तों एवं भावनाओं को संजोकर रखने का माध्यम भी हैं। युवा ध्रुवेंद्र भास्कर ने कहा कि विश्व पत्र दिवस भागदौड़ भरी जिंदगी में लोगों को कुछ समय निकालकर अपने प्रियजनों, मित्रों एवं परिवार के सदस्यों को पत्र लिखने तथा इस खूबसूरत परंपरा को जीवित रखने का संदेश देता है। उन्होंने कहा, ''एक पत्र, कई भावनाएं–यही इसकी सबसे बड़ी खूबसूरती है।'' इस अवसर पर तुलसी प्रजापति, अनुप राय, जितेंद्र पांडे सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

बेटियों ने पिता की अर्थी को दिया कांधा, मुखाग्नि देकर निभाया अंतिम संस्कार का दायित्व

कोटा में पारुल गोधा एवं रूपल जैन ने निभाई पिता के प्रति जिम्मेदारी, समाज ने की सराहना

कोटा. शाबाश इंडिया। कुनहाड़ी स्थित ऋद्धि-सिद्धि नगर में एक भावुक एवं प्रेरणादायक दृश्य देखने को मिला। स्वर्गीय अखिलेश जी जैन लुहाड़िया के निधन के बाद उनकी बेटियों पारुल गोधा एवं रूपल जैन ने अपने पिता की अंतिम यात्रा का दायित्व स्वयं निभाया। दोनों बेटियों ने पिता की अर्थी को कांधा देने के साथ ही मुखाग्नि देकर अंतिम संस्कार की रस्म भी पूरी की। स्वर्गीय अखिलेश जी जैन लुहाड़िया का कोटा में उपचार के दौरान निधन हो गया था। उनके कोई पुत्र नहीं था। ऐसे में उनकी बेटियों ने आगे बढ़कर पिता के अंतिम संस्कार से जुड़ी प्रमुख रस्मों की जिम्मेदारी अपने हाथों में ली। पारुल गोधा एवं रूपल जैन द्वारा पिता की अर्थी को कांधा देना और मुखाग्नि देकर अंतिम संस्कार करना वहां मौजूद लोगों के लिए भावुक क्षण रहा। बेटियों ने सामाजिक परंपराओं से आगे बढ़ते हुए यह संदेश दिया कि माता-पिता के प्रति कर्तव्य निभाने में बेटा और बेटी में कोई अंतर नहीं है। इस अवसर पर उपस्थित जैन समाज एवं क्षेत्र के लोगों ने दोनों बेटियों के साहस, संवेदनशीलता एवं पिता के प्रति समर्पण की सराहना की। समाजजनों ने कहा कि बेटियों द्वारा इस प्रकार अंतिम संस्कार की जिम्मेदारी निभाना सामाजिक सोच में सकारात्मक बदलाव का प्रतीक है। यह परिवार के साथ-साथ समाज के लिए भी प्रेरणादायक उदाहरण है। पिता की अंतिम यात्रा में बेटियों द्वारा जिस तरह सभी दायित्व निभाए गए, वह न केवल परिवार के लिए बल्कि समाज के लिए भी भावनात्मक एवं प्रेरणादायक संदेश बन गया। स्वर्गीय अखिलेश जी जैन लुहाड़िया अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन से परिवार, रिश्तेदारों एवं परिचितों में शोक की लहर है। अंतिम संस्कार के दौरान बड़ी संख्या में समाजजन एवं परिचित उपस्थित रहे और दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सन्मति ने किया भव्य भक्तामर विधान का आयोजन

गायक गौरव जैन एवं खुशबू जैन की मधुर स्वर लहरियों ने बांधा समां

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सन्मति, जयपुर की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भाद्रपद माह में भव्य भक्तामर विधान का आयोजन रविवार, 30 अगस्त को श्री दिगंबर जैन मंदिर, राणा जी की नसियां, खानिया, आगरा रोड, जयपुर में श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ किया गया। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने भक्तामर स्तोत्र के सामूहिक विधान में भाग लेकर पुण्यार्जन किया। साज एवं संगीत के साथ आयोजित भक्तामर विधान में प्रसिद्ध गायक गौरव जैन एवं श्रीमती खुशबू जैन (कुचामन निवासी) ने अपनी सुमधुर स्वर लहरियों से समां बांध दिया। उनकी भक्ति संगीत की प्रस्तुतियों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूम उठे और पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। अध्यक्ष राजेश-रानी पाटनी एवं निवर्तमान अध्यक्ष मनीष-शोभना लोंग्या ने बताया कि कार्यक्रम का सफल आयोजन मुख्य समन्वयक राकेश-समता गोदिका एवं मुख्य संयोजक मनोज-ममता शाह के संयोजन में किया गया। मुख्य समन्वयक राकेश-समता गोदिका के अनुसार कार्यक्रम में राजेश-रानी पाटनी को सोधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनके अलावा राजेश जैना-गंगवाल, मनीष-शोभना लोंग्या, राकेश-समता गोदिका, दर्शन-विनीता जैन, कमल-मंजू ठोलिया, विमल-शिमला लुहाड़िया, शैलेश-रूपा पाटनी, सुबोध चंद्र-चांदवाड़ एवं अनिल-ज्योति जैन चौधरी, पंकज-नीना पाटनी सहित अन्य श्रद्धालुओं ने इंद्र के रूप में विधान में सहभागिता की। विधान मंडल पर दीप प्रज्वलन का पुण्यार्जन सुरेंद्र-मृदुला पांड्या, प्रथम अभिषेक का पुण्यार्जन सुनील-रेणु बाकलीवाल, शांतिधारा का पुण्यार्जन दिनेश-संगीता गंगवाल तथा महाआरती का पुण्यार्जन जयदीप-सुनीता शाह ने प्राप्त किया। उपाध्यक्ष चक्रेश-पिंकी जैन ने बताया कि कार्यक्रम में रीजन अध्यक्ष सुनील बज, निवर्तमान अध्यक्ष राजेश-सीमा बड़जात्या एवं कोषाध्यक्ष प्रमोद-सोनल जैन के साथ नवकार ग्रुप के मोहनलाल गंगवाल एवं विजय पांड्या, सम्यक ग्रुप के डॉ. इंद्र कुमार जैन, संगिनी फॉरएवर की शकुंतला-महावीर बिंदायक्या सहित विभिन्न ग्रुपों के पदाधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रमुख समाजसेवी प्रमोद पहाड़िया, विनोद छाबड़ा 'मोनू' सहित बड़ी संख्या में ग्रुप के सदस्य अपने परिवार सहित उपस्थित रहे। आयोजन के दौरान सामूहिक पूजा-विधान के साथ पूरे परिसर में धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण बना रहा।

@ पेज 13 व 14

भक्तामर विधान में गूंजी भक्ति की स्वर लहरियां, सन्मति ग्रुप के आयोजन में उमड़ा श्रद्धा सागर

भक्ति और संगीत का अनूठा संगम, दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सन्मति ने किया भक्तामर विधान

ज्ञान का फल चारित्र और वैराग्य है : आर्यिका सिद्ध श्री माताजी

बांसवाड़ा जिले के कलिंजरा से सुरेश चंद्र गांधी नगमा की रिपोर्ट

कलिंजरा. शाबाश इंडिया। आध्यात्मिक वर्षायोग 2026 के अंतर्गत आयोजित मंगल प्रवचन में आर्यिका 105 सिद्ध श्री माताजी ने छहढाला की पांचवीं ढाल के माध्यम से वैराग्य एवं 12 भावनाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। माताजी ने कहा कि केवल ज्ञान अर्जित करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि ज्ञान को चारित्र में परिणत करना ही उसकी वास्तविक सफलता है। जैसे दूध को घी में परिवर्तित करने के बाद वह खराब नहीं होता, उसी प्रकार ज्ञान को आचरण में उतारने से वह जीवन को सार्थक बनाता है। उन्होंने कहा कि भोगों के बीच रहते हुए भी त्याग की भावना बनाए रखना ही सच्चा वैराग्य है। अनित्य, अशरण, एकत्व, अन्यत्व, संसार, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ एवं धर्म–इन 12 भावनाओं का निरंतर चिंतन वैराग्य को मजबूत करता है और मन में समता भाव जागृत करता है। प्रवचन में माताजी ने श्रोताओं को प्रेरित करते हुए कहा कि प्रवचन केवल सुनने या दूसरों को बताने के लिए नहीं, बल्कि उसे हृदय में उतारकर जीवन में आचरण करने के लिए है। सच्चा श्रोता वही है, जो सुनी हुई धर्मवाणी को अपने जीवन में उतारकर अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए।

विद्यार्थियों को अजनबियों से सावधान रहने का संदेश

नसीराबाद (रोहित जैन)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अजमेर के अध्यक्ष एवं सचिव के मार्गदर्शन में 1 सितंबर को तालुका नसीराबाद के न्यायिक अधिकारियों द्वारा विभिन्न विद्यालयों में विधिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को अजनबियों से सावधान रहने के प्रति जागरूक किया गया। तालुका सचिव ने बताया कि रालसा, जयपुर के राज्य स्तरीय अभियान ''ट्रांसफॉर्मेटिव ट्यूजडे'' के तहत मंगलवार को ''अजनबी से सावधान–मना करो, दूर जाओ, बताओ'' थीम पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश, नसीराबाद श्रीमती ममता सैनी ने मेजर कमलेश राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नसीराबाद में विद्यार्थियों को जागरूक किया। वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, नसीराबाद श्रीमती सुमन गिठाला ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रामसर में तथा सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट, नसीराबाद श्री महावीर सैनी ने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, रामसर में विद्यार्थियों को अजनबियों से सावधान रहने के संबंध में जानकारी दी। इस दौरान न्यायिक अधिकारियों ने विद्यार्थियों को अपहरण, व्यपहरण तथा इनसे संबंधित कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों को किसी अजनबी द्वारा दिए जाने वाले प्रलोभन से बचने, संदिग्ध स्थिति में तुरंत वहां से दूर जाने तथा ऐसी किसी भी घटना की जानकारी अभिभावकों, शिक्षकों या संबंधित अधिकारियों को देने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन में संबंधित विद्यालयों के संस्था प्रधानों ने सकारात्मक सहयोग प्रदान किया।

पाराशर परिवार गुलाबपुरा बना पुण्य का भागी, नि:शुल्क मिर्गी रोग शिविर में 170 रोगी लाभान्वित

गुलाबपुरा (रोहित जैन). शाबाश इंडिया

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति, गुलाबपुरा की ओर से माह के प्रथम मंगलवार, 1 सितंबर को संस्था परिसर में नि:शुल्क मिर्गी रोग चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। संस्था के मंत्री पदमचंद खटोड़ ने बताया कि शिविर में वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. अरुण नाहर ने सेवाएं प्रदान करते हुए 170 मरीजों का उपचार एवं परामर्श किया। इनमें 17 नए मरीज शामिल थे। सभी मरीजों को नि:शुल्क दवाओं का वितरण भी किया गया। संस्था मंत्री पदम चंद जैन ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी, जबकि अध्यक्ष घेवर चंद श्रीश्रीमाल ने अतिथियों एवं उपस्थितजनों का स्वागत किया। कोषाध्यक्ष राजेंद्र चौरड़िया ने आभार व्यक्त किया। शिविर में अनिल चौधरी ने मरीजों को मिर्गी रोग से बचाव एवं योग के महत्व की जानकारी देते हुए नियमित योगाभ्यास करने पर जोर दिया। श्याम पाराशर एवं दिलीप पाराशर ने सभी मरीजों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की शुभकामनाएं प्रेषित कीं। **पाराशर परिवार ने पूरे सितंबर माह के लिए की भोजन सेवा:** शिविर के लाभार्थी के रूप में स्वर्गीय सत्यदेवी जी पाराशर की पुण्य स्मृति में श्यामसुंदर, संजय कुमार, सतीश कुमार एवं संदीप कुमार पाराशर, श्याम मिष्ठान भंडार, गुलाबपुरा की ओर से पूरे सितंबर माह में आयोजित होने वाले सभी शिविरों में आने वाले मरीजों एवं उनके परिजनों के लिए नि:शुल्क भोजन सेवा की व्यवस्था की गई है। इस सेवा का लाभ अब तक 320 से अधिक लोगों ने उठाया। शिविर के आयोजन में मदन लाल लोढ़ा, मदन लाल रांका, देवकरण कोठारी, सुरेश लोढ़ा, सुशील चौधरी, प्रेम पाड़लेचा, ज्ञान बाबेल, दिलीप पाराशर, कमल कावड़िया, रामकृष्ण त्रिपाठी, राजेंद्र जायसवाल सहित अनेक गणमान्यजनों ने सेवाएं प्रदान कीं।

विनम्र एकेडमी व वीतराग शासन बालिका मंडल के आयोजन में गूंजा णमोकार महामंत्र

संगीतमय महाआरती में भक्ति में सराबोर हुआ अंबाह, बच्चों ने भी बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

अंबाह. शाबाश इंडिया

परम पूज्य गुरु मां गणिनि आर्यिका रत्न 105 श्री संगममति माताजी ससंघ के पावन मंगल सान्निध्य में चल रही 35 दिवसीय णमोकार महामंत्र अर्चना के अंतर्गत सोमवार शाम विनम्र एकेडमी एवं वीतराग शासन बालिका मंडल अंबाह के पुण्यार्जकत्व में संगीतमय महाआरती का भव्य एवं भक्तिमय आयोजन किया गया। नगर पालिका चौराहे से प्रारंभ हुई महाआरती जैन बगीची पहुंचकर संपन्न हुई। इस दौरान पूरा अंबाह णमोकार महामंत्र की मंगल ध्वनि और धार्मिक जयघोषों से गुंजायमान रहा। महाआरती में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं सपरिवार शामिल हुए। विशेष रूप से बच्चों की बड़ी संख्या में सहभागिता आयोजन का आकर्षण रही। नन्हे बच्चों ने उत्साह और श्रद्धाभाव के साथ महाआरती में भाग लिया। उनकी उपस्थिति ने आयोजन को धार्मिक उल्लास के साथ संस्कारमय स्वरूप प्रदान किया। नगर पालिका चौराहे से श्रद्धालु संगीतमय महाआरती के साथ जैन बगीची की ओर आगे बढ़े। मार्ग में भक्ति गीतों, णमोकार महामंत्र के जाप और धार्मिक जयकारों से वातावरण आध्यात्मिक हो उठा। श्रद्धालु भक्ति में लीन होकर भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करते हुए आगे बढ़ते रहे। जैन बगीची पहुंचने के बाद विधिवत संगीतमय महाआरती संपन्न हुई। इसके पश्चात श्रद्धालुओं ने एक घंटे तक सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र का पाठ किया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं द्वारा एक स्वर में किए गए महामंत्र के जाप से जैन बगीची का वातावरण अत्यंत भक्तिमय और आध्यात्मिक हो गया। श्रद्धालु महामंत्र की मंगल ध्वनि के बीच आत्मिक शांति और धमार्नुभूति का अनुभव करते नजर आए। इस अवसर पर विनम्र एकेडमी एवं वीतराग शासन बालिका मंडल अंबाह पुण्यार्जक परिवार रहे। आयोजन में सकल दिगंबर जैन समाज के श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। चातुर्मास समिति एवं समाज के सदस्यों ने आयोजन की व्यवस्थाओं में सहयोग प्रदान किया। श्रद्धालुओं ने कहा कि णमोकार महामंत्र जैन धर्म का मंगलकारी महामंत्र है। इसका स्मरण और सामूहिक जाप आत्मशुद्धि एवं आध्यात्मिक चेतना का माध्यम है। ऐसे आयोजनों से समाज में धार्मिक वातावरण निर्मित होने के साथ

बच्चों और युवा पीढ़ी को भी संस्कार एवं धर्म से जुड़ने का अवसर मिलता है। गुरु मां संगममति माताजी ससंघ के मंगल सान्निध्य में आयोजित इस संगीतमय महाआरती में श्रद्धा, भक्ति और संस्कार का सुंदर संगम देखने को मिला। देर शाम तक जैन बगीची में णमोकार महामंत्र और वीतराग भगवान के जयघोष गूंजते रहे।

किशनगढ़ में 5 दीक्षार्थी भैया जी की हुई भव्य गोद भराई

सैकड़ों श्रद्धालुओं ने किया पुण्यार्जन, संयम के पथ पर बढ़ने की दी मंगलकामनाएं

किशनगढ़. शाबाश इंडिया। धर्मनगरी किशनगढ़ में आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में वर्षायोग के दौरान 5 बाल ब्रह्मचारियों की गोद भराई का भावपूर्ण एवं भक्तिमय आयोजन हुआ। आगामी 25 अक्टूबर 2026 को दिल्ली के लाल किले पर पट्टाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज के कर-कमलों से 5 बाल ब्रह्मचारियों को मुनि दीक्षा प्रदान की जाएगी। इसी पावन प्रसंग के निमित्त किशनगढ़ में दीक्षार्थी भैया जी की गोद भराई का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन बसंत बैद ने किया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम पांचों दीक्षार्थियों ने अपने जीवन, वैराग्य की भावना एवं दीक्षा के संकल्प से संबंधित विचार व्यक्त किए। इस दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं को सभी दीक्षार्थियों का परिचय भी कराया गया। इनमें अंकित भैया जी प्रतापगढ़ (राजस्थान), सीए; अनिकेत भैया जी मुंबई, इंजीनियर; यश भैया जी भिंड, 21 वर्ष; प्रसन्न भैया जी छत्रपति संभाजी नगर तथा बकील चंद्र जी बड़ौत शामिल हैं। विशेष बात यह रही कि इनमें एक दीक्षार्थी सीए हैं, जबकि एक ने इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की है। उच्च शिक्षा और उज्ज्वल भविष्य के अवसरों के बावजूद संयम एवं आत्मकल्याण के मार्ग को चुनना उपस्थित श्रद्धालुओं के लिए प्रेरणादायी रहा। इसके पश्चात आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज ससंघ के ब्रह्मचारी राजेश भैया, हर्ष भैया एवं रीना दीदी सहित संघ के सभी ब्रह्मचारियों द्वारा पांचों दीक्षार्थियों की गोद भराई की गई। इस दौरान पूरा वातावरण भक्तिभाव से सराबोर हो गया।

महावीर इंटरनेशनल एपेक्स ने सागवाड़ा के पीएम श्री महिपाल विद्यालय में वितरित की जीवन रक्षक टैबलेट किट

हृदयाघात की स्थिति में प्राथमिक चिकित्सा सुलभ कराने के उद्देश्य से 18 गुरुजनों को दी गई किट

सागवाड़ा. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल एपेक्स की ओर से हृदयाघात की स्थिति में प्राथमिक चिकित्सा सुलभ कराने के उद्देश्य से पीएम श्री महिपाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सागवाड़ा में जीवन रक्षक टैबलेट किट वितरित की गई। महावीर इंटरनेशनल एपेक्स के इंटरनेशनल डायरेक्टर, नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल अजीत कोठिया ने विद्यालय के गुरुजनों को ये किट प्रदान की। कार्यक्रम की शुरूआत में कार्यवाहक संस्था प्रधान मुकेश भावसार ने अजीत कोठिया का परिचय कराया तथा विद्यालय परिवार की ओर से उनका सम्मान किया। अपने उद्बोधन में कोठिया ने सभी गुरुजनों को रक्षाबंधन, जन्माष्टमी एवं शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने भारतीय स्टेट बैंक में सागवाड़ा में दी गई अपनी सेवाओं का उल्लेख करते हुए महिपाल विद्यालय के साथ अपने घनिष्ठ बैंकिंग संबंधों को भी याद किया। कोठिया ने महावीर इंटरनेशनल की ओर से पीएम श्री महिपाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सागवाड़ा में किए गए विभिन्न सेवा कार्यों की जानकारी दी। इनमें बेबी किट वितरण, सेनेटरी नेपकिन वितरण, वृक्षारोपण, नेत्रदान, मरणोपरांत देहदान, रात्रिकालीन ई-चौपाल एवं नेत्र चिकित्सा शिविर सहित विभिन्न सेवा गतिविधियां शामिल हैं। कार्यक्रम में स्टाफ सदस्यों ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यवाहक संस्था प्रधान मुकेश भावसार ने महावीर इंटरनेशनल के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए विद्यालय का चयन करने के लिए संस्था का आभार व्यक्त किया। आकस्मिक हृदयाघात की स्थिति में प्राथमिक चिकित्सा सुलभ कराने के उद्देश्य से अजीत कोठिया ने स्टाफ सदस्यों को तीन-तीन टैबलेट वाली जीवन रक्षक किट प्रदान की। उन्होंने बताया कि किट में एस्पिरिन 150 एमजी, सॉर्बिट्रेट 10 एमजी तथा एटॉर्वास्टेटिन 80 एमजी शामिल हैं। उन्होंने इन दवाओं के उपयोग एवं हृदय संबंधी आपात स्थिति में प्राथमिक सहायता के बारे में जानकारी दी।

लोहे की बेड़ियां टूट जाएं, राग-द्वेष का बंधन न टूटे तो मुक्ति कैसी : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

शांतिभवन की विशाल धर्मसभा में कहा—पर्युषण संबंध छोड़ने का नहीं, भीतर की पकड़ ढीली करने का पर्व

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

''आदमी अक्सर समझता है कि बंधन बाहर हैं—परिवार में, वस्तुओं में, परिस्थितियों में या लोगों में। जबकि सबसे मजबूत बेड़ियां भीतर होती हैं। लोहे की जंजीर टूट सकती है, लेकिन राग की पकड़ नहीं छूटी तो सामर्थ्य होते हुए भी मनुष्य स्वयं को मुक्त नहीं कर पाता। द्वेष भी दूरी नहीं बनाता, उलटे उसी व्यक्ति को मन में और गहराई से बैठा देता है, जिससे हम छुटकारा चाहते हैं।'' ये विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने शांतिभवन आनंद अनुभूति वषावास के अंतर्गत आयोजित विशाल धर्मसभा में ''राग-द्वेष के बंधन और आत्मशक्ति'' विषय पर व्यक्त किए। युवाचार्यश्री ने एक ताकतवर मल्ल का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि उसके शरीर में इतनी शक्ति थी कि वह लोहे की हथकड़ी और पैरों की बेड़ी एक झटके में तोड़ सकता था, फिर भी वह वर्षों तक जेल में बंद रहा। राजा ने उससे पूछा कि जब इतना सामर्थ्य था तो भागे क्यों नहीं? उसने उत्तर दिया कि यदि वह जेल से निकल जाता तो उसके परिवार को कष्ट उठाना पड़ता। युवाचार्यश्री ने कहा कि जेल की दीवारें उसे नहीं रोक रही थीं, बल्कि परिवार के प्रति राग उसे रोक रहा था। यही हमारी स्थिति है। शक्ति हमारे भीतर है, लेकिन भीतर की पकड़ उससे बड़ी हो जाती है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को पद, धन, प्रतिष्ठा या सामर्थ्य मिलते ही सबसे बड़ा खतरा बाहर से नहीं, बल्कि भीतर से पैदा होता है। वह उस शक्ति को साधन बनाने के बजाय स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने में लगा देता है। अहंकार ताकत नहीं, बल्कि ताकत पर लगा ग्रहण है। पूर्णिमा का चंद्रमा कितना ही उज्ज्वल क्यों न हो, ग्रहण उसकी चमक को ढक देता है। अहंकार भी व्यक्ति के गुणों के साथ यही करता है। युवाचार्यश्री ने कहा कि समस्या यह भी है कि अहंकारी व्यक्ति अपने अहंकार को पहचान नहीं पाता। वह उसे स्वाभिमान कह देता है, जिद को सिद्धांत और अपनी बात मनवाने को दृढ़ता मान लेता है। जहां अपनी भूल की संभावना ही समाप्त हो जाए, वहां सुधार का रास्ता भी बंद हो जाता है।

राग का पता बदल जाना वैराग्य नहीं

युवाचार्यश्री ने कहा कि राग का स्वभाव बहुत सूक्ष्म है। वह जाता कम है, केवल अपना स्थान बदलता है। बचपन में मां, फिर मित्र, आगे जीवनसाथी, संतान, कारोबार, करियर, पद और प्रतिष्ठा—व्यक्ति एवं वस्तुएं बदलती रहती हैं, लेकिन भीतर की पकड़ बनी रहती है। राग का पता बदल जाना वैराग्य नहीं है। उन्होंने कहा कि एक कंधे से बोझ हटाकर दूसरे कंधे पर रख देने से कुछ समय राहत मिल सकती है, लेकिन वजन खत्म नहीं होता। इसी तरह एक व्यक्ति से मोह हटाकर दूसरे में और एक वस्तु से मोह हटाकर दूसरी में उलझ जाना मुक्ति नहीं है। बंधन व्यक्ति या वस्तु में कम और हमारे भीतर की पकड़ में अधिक होता है। गौतम स्वामी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि प्रभु महावीर के प्रति उनका अनुराग था, लेकिन वह केवल महावीर के व्यक्तित्व के प्रति नहीं, बल्कि उनकी सर्वज्ञता, वीतरागता एवं गुणों के प्रति था। यही बंधनकारी राग और साधना को ऊंचा उठाने वाले अनुराग में अंतर है। व्यक्ति से राग बांधता है, जबकि गुणों से अनुराग ऊपर उठाता है। उन्होंने कहा कि संत के प्रति आकर्षण भी यदि केवल व्यक्तित्व, बोलने की शैली या प्रभाव तक सीमित रह जाए तो साधना वहीं रुक सकती है। प्रवचन सुनकर केवल वक्ता अच्छा लगे तो यह आकर्षण है, लेकिन प्रवचन सुनकर अपनी कमी दिखाई देने लगे और जीवन में परिवर्तन आने लगे तो संत का सानिध्य सार्थक है। संत को पकड़ना नहीं, उनके गुणों को पकड़ना ही साधना है।

रोजमर्रा की आदतों में भी दिखाई देता है राग

युवाचार्यश्री ने कहा कि राग का चेहरा केवल रिश्तों में नहीं, बल्कि रोजमर्रा की छोटी-छोटी आदतों में भी दिखाई देता है। भोजन अच्छा दिखा तो ले लिया, दूसरा पसंद आया तो वह भी ले लिया और अंत में थाली में छोड़ दिया। जरूरत से नहीं, आकर्षण से लिया गया भोजन भी राग का ही रूप है। शरीर को जितना चाहिए, उतना लेना विवेक है, जबकि स्वाद के पीछे बहते जाना राग है। उन्होंने कहा कि मोबाइल, धन, वस्त्र या किसी भी साधन का उपयोग गलत नहीं है। समस्या तब शुरू होती है, जब साधन हमारी पहचान बनने लगे। वस्तु हमारी जरूरत पूरी करे तो ठीक है, लेकिन यदि वही हमारी खुशी और प्रतिष्ठा तय करने लगे तो समझना चाहिए कि पकड़ बढ़ चुकी है। साधन पर अधिकार रहे तो सुविधा है, लेकिन साधन मन पर अधिकार कर ले तो वह बंधन बन जाता है।

द्वेष मन में और गहरी गांठ बनाता है

राग के बाद युवाचार्यश्री ने द्वेष को और गहरी गांठ बताते हुए कहा कि मनुष्य सोचता है कि जिससे द्वेष कर लिया, उससे संबंध समाप्त हो गया, जबकि सच इसके विपरीत है। किसी व्यक्ति ने चार बार अच्छा कहा हो तो शायद याद न रहे, लेकिन एक बार कटु बोल दिया तो वर्षों तक वही शब्द भीतर घूमते रहते हैं। उन्होंने कहा कि द्वेष किसी व्यक्ति को मन से निकालता नहीं है, बल्कि उसे और मजबूती से भीतर बैठा देता है। इसलिए मुक्ति केवल बाहरी संबंधों या परिस्थितियों से दूरी बनाने में नहीं, बल्कि मन के भीतर राग-द्वेष की पकड़ को समाप्त करने में है।

सी.आर.डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज ऐलनाबाद में राष्ट्रीय खेल दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

ऐलनाबाद (रमेश भार्गव)

सी.आर.डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज, ऐलनाबाद में हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के लिए विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में निताशा राकेश सिहाग, पूर्व जिला अध्यक्ष, भाजपा सिरसा एवं वर्तमान में भाजपा की राज्य कार्यकारिणी सदस्य तथा नीरज कटारिया, संरक्षक, पतंजलि योग समिति एवं भारत विकास परिषद की विवेकानंद शाखा की सदस्य उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में सी.आर.डी.ए.वी. स्कूल के प्राचार्य कमल मेहता एवं सी.आर.डी.ए.वी. कॉलेज के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर डॉ. करुण मेहता भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। निताशा राकेश सिहाग ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि खेल विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ उनमें अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं टीम भावना का विकास करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। नीरज कटारिया ने विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा योग एवं नियमित व्यायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ

शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में खेल एवं योग की महत्वपूर्ण भूमिका है। कार्यक्रम का मंच संचालन सपना मेहता एवं जस्मीन ने प्रभावशाली एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया। दोनों ने कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करते हुए मंच को जीवंत बनाए रखा।

रेखा जैन ने वार्ड 11 से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में भरा नामांकन

मूलभूत सुविधाओं के विस्तार और जनसमस्याओं के समाधान को बताया प्राथमिकता

जयपुर. शाबाश इंडिया। विद्याधर नगर विधानसभा क्षेत्र के वार्ड 11 से रेखा जैन ने निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन दाखिल कर चुनावी मैदान में ताल ठोक दी है। नामांकन के बाद उन्होंने कहा कि वार्ड में मूलभूत सुविधाओं का विस्तार और जनसमस्याओं का समाधान उनकी प्राथमिकता रहेगा। रेखा जैन ने स्वच्छता, सड़क, नाली, पेयजल और स्ट्रीट लाइट जैसी समस्याओं के समाधान को प्रमुख मुद्दा बताते हुए कहा कि जनता को ऐसा प्रतिनिधि चुनना चाहिए, जो क्षेत्रवासियों के लिए सहज उपलब्ध रहे और वार्ड के विकास के लिए निरंतर काम करे। उन्होंने कहा, ''वार्ड 11 मेरा अपना परिवार है। मैं राजनीति के लिए नहीं, बल्कि जनता की सेवा और क्षेत्र के विकास के संकल्प के साथ चुनाव मैदान में उतरी हूं।'' नामांकन के साथ ही रेखा जैन ने वार्ड में जनसंपर्क अभियान तेज करने की तैयारी शुरू कर दी है। वे घर-घर पहुंचकर मतदाताओं से संवाद करेंगी और विकास एवं जनसेवा से जुड़े अपने विजन को उनके सामने रखेंगी।

राजवंश पब्लिक स्कूल में 'अजनबी से सावधान' एवं विधिक जागरूकता शिविर आयोजित

विद्यार्थियों को 'No, Go, Tell' के माध्यम से सुरक्षा और कानूनी अधिकारों के प्रति किया जागरूक

जयपुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर जिला की ओर से 'Transformative Tuesdays' अभियान के अंतर्गत बरकत नगर स्थित राजवंश पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल में 'अजनबी से सावधान' (Stranger Danger) एवं विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। विद्यालय की निदेशक श्रीमती सीता चौहान ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अजनबी व्यक्तियों से सावधान रहने के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें सुरक्षित, स्वस्थ एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित करना था।इस अवसर पर किशोर न्याय बोर्ड-2, जयपुर जिला की प्रिंसिपल मजिस्ट्रेट सुश्री पुनीत सोनगरा ने विद्यार्थियों को 'Stranger Danger – No, Go, Tell' विषय पर संबोधित किया। उन्होंने बच्चों को सरल एवं प्रभावी तरीके से समझाया कि यदि किसी अजनबी व्यक्ति की किसी हरकत या व्यवहार से वे असहज महसूस करें तो स्पष्ट रूप से 'ना' कहें, वहां से दूर हट जाएं और तुरंत अपने माता-पिता, शिक्षक अथवा किसी विश्वसनीय व्यक्ति को इसकी जानकारी दें।

जेएसजी नवकार ग्रुप ने पेश की मानवता की मिसाल

जरूरतमंद नवजात के लिए तत्काल ओ नेगेटिव रक्त की कराई व्यवस्था

उदयपुर. शाबाश इंडिया। मानव सेवा के क्षेत्र में जैन सोशल ग्रुप नवकार, उदयपुर ने एक बार फिर संवेदनशीलता और तत्परता का परिचय देते हुए जरूरतमंद नवजात के लिए तत्काल ओ नेगेटिव रक्त की व्यवस्था कर मानवता की मिसाल पेश की। घासा निवासी प्रहलाद डांगी के एक दिन के नवजात पुत्र को तत्काल ओ नेगेटिव रक्त की आवश्यकता होने पर परिजनों ने जैन सोशल ग्रुप नवकार के सचिव हेमंत परमार से संपर्क किया। सूचना मिलते ही हेमंत परमार ने जेएसजी मेवाड़ रीजन के सचिव आशुतोष सिसोदिया के माध्यम से रक्तदाता की व्यवस्था के लिए सामाजिक स्तर पर प्रयास शुरू किए। इस दौरान श्रीमती हेमलता शाह, पत्नी श्री अखिलेश गदिया ने ओ नेगेटिव रक्त समूह होने पर तत्काल रक्तदान की सहमति दी। वह तुरंत एमबी हॉस्पिटल के ब्लड बैंक पहुंचीं और रक्तदान कर नवजात के उपचार में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर जेएसजी नवकार ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष प्रशांत सोनी एवं अध्यक्ष मनीष डांगी भी उपस्थित रहे। इस पुनीत सेवा कार्य के लिए नवजात के परिजन मांगीलाल डांगी एवं घासा जैन मित्र मंडल के अमित परमार ने जैन सोशल ग्रुप नवकार, उदयपुर तथा रक्तदाता श्रीमती हेमलता शाह एवं श्री अखिलेश गदिया के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।